Sem-4
MJ-6

भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण

विश्व की तीन हजार से अधिक भाषाओं का वर्गीकरण महाद्वीप, देश, धर्म, काल, आकृति, परिवार एवं प्रभाव के आधार पर किया जाता है। किन्तु भाषा-विज्ञान की दृष्टि से आकृतिमूलक तथा पारिवारिक या ऐतिहासिक वर्गीकरण ही महत्त्वपूर्ण हैं। प्रभावमूलक वर्गीकरण भी भाषिक महत्त्व का है किन्तु यह अध्ययन अभी शैशवावस्था में है। किसी भी भाषा में अर्थ-बोधन दो आधारों पर होता है — संबंधतत्व और अर्थतत्व। आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार संबंधतत्व है जबकि पारिवारिक वर्गीकरण का आधार अर्थतत्व है।

आकृतिमूलक वर्गीकरण भाषा की पद-रचना या संरचना से संबद्ध है; अर्थात् वाक्य-रचना और पद-रचना पर ही यह वर्गीकरण आधारित है। इस वर्गीकरण का श्रेय मुख्य रूप से श्लेगल, ग्रिम, श्लाइखर जैसे भाषा-वैज्ञानिकों को है। विश्व की भाषाओं का भाषा-वैज्ञानिकों द्वारा किये गये आकृतिमूलक वर्गीकरण को निम्नांकित सारणी द्वारा समझा जा सकता है:—

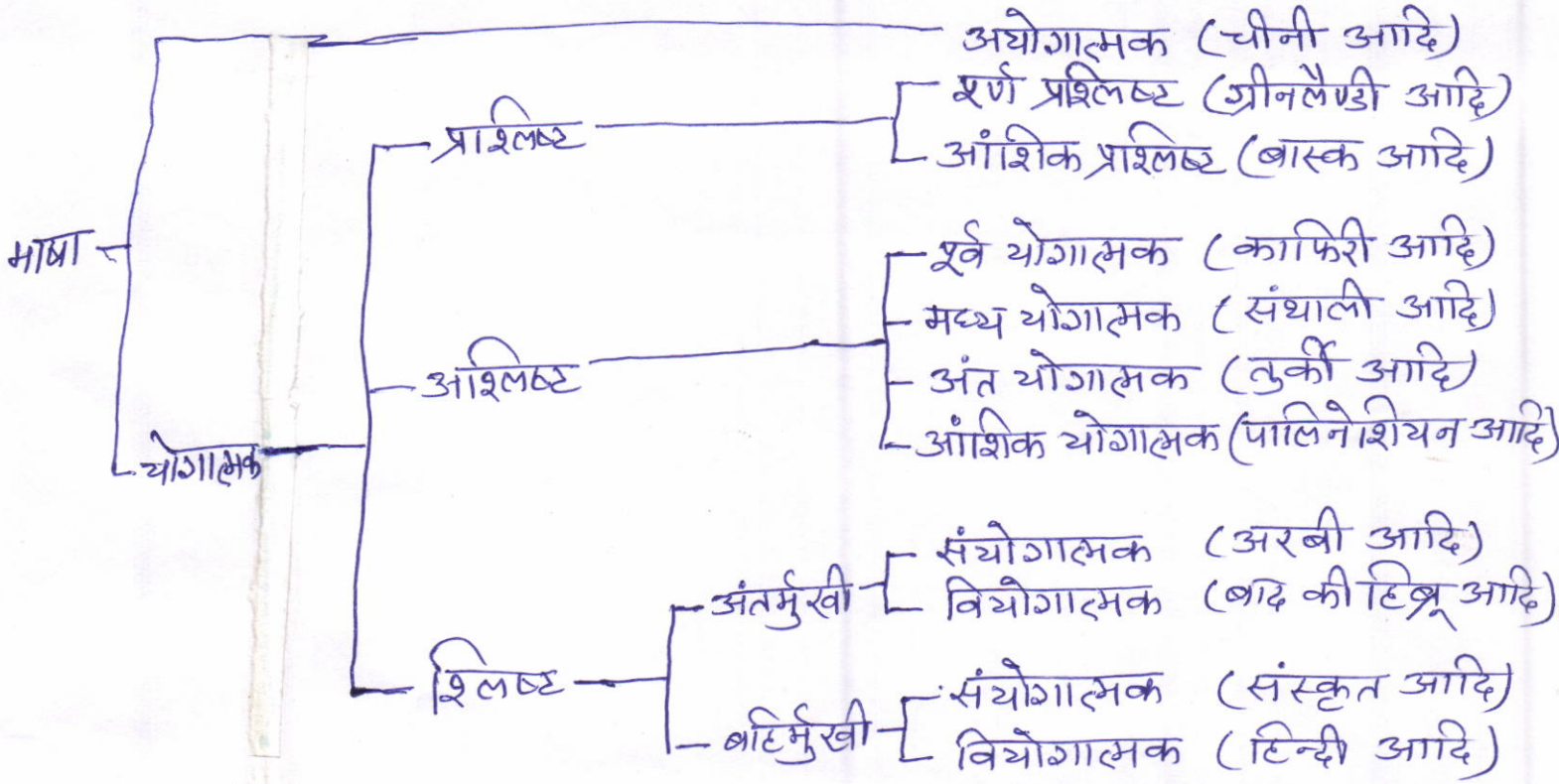

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि विश्व की भाषाओं को दो मुख्य वर्गों में बाँटा गया है — अयोगात्मक और योगात्मक भाषाएँ।

① अयोगात्मक भाषाएँ :- चीनी, सूडानी, बर्मी, स्यामी आदि भाषाएँ अयोगात्मक हैं क्योंकि यहाँ शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय आदि जोड़कर वाक्य में प्रयुक्त होने के लिए शब्द नहीं बनाये जाते, बल्कि स्थान-परिवर्तन

द्वारा ही शब्दों का अर्थ निकलता है। जैसे – त्सेन (चलना) तथा लिओन (समाप्त) द्वारा चीनी भाषा में चलना क्रिया का भूतकालिक रूप बनाया जाता है।

② योगात्मक भाषाएँ :– अयोगात्मक भाषाओं के विपरीत योगात्मक भाषाओं में संबंध तत्त्व और अर्थतत्त्व दोनों में योग होता है। जैसे 'मेरे' शब्द में अर्थतत्त्व (मैं) और संबंध तत्त्व (संबंधवाचक प्रत्यय) का योग है। इन भाषाओं को योग की प्रकृति के आधार पर तीन वर्गों में बाँटा जाता है। – प्रश्लिष्ट योगात्मक, अश्लिष्ट योगात्मक और श्लिष्ट योगात्मक।

(अ) प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ – इन भाषाओं में संबंध-तत्त्व और अर्थतत्त्व इतना मिलाजुला होता है कि इनकी अलग पहचान कठिन होती है, जैसे – 'ऋतु' से 'आर्तव'। ऐसी भाषाओं में दो प्रकार का योग होता है –

(क) पूर्ण प्रश्लिष्ट – यहाँ योग इतना पूर्ण होता है कि पूरा वाक्य लगभग एक शब्द बन जाता है। जैसे ग्रीनलैण्डी भाषा में 'नातेन' (लाओ), 'अमोखोल' (नाव), 'निन' (हम) के योग से 'नाव्होलिनिन' (हमारे पास नाव लाओ) बन जाता है।

(ख) आंशिक प्रश्लिष्ट – बास्क आदि भाषाओं में सर्वनाम और क्रियाओं का ऐसा योग होता है कि क्रिया अस्तित्वहीन हो जाती है। जैसे – नकारसु (तू मुझे ले जाता है), हकारत (मैं तुझे ले जाता हूँ)

(ब) अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ – इन भाषाओं में संबंध तत्त्व (प्रत्यय) अर्थतत्त्व से इस प्रकार जुड़े होते हैं कि वे 'तिल-तंडुलवत्' स्पष्ट दीखते हैं। ये भाषाएँ पाँच वर्गों की हैं –

(क) पूर्वयोगात्मक या पुरः प्रत्यय – जुलू आदि भाषाएँ इस वर्ग की हैं जहाँ संबंध तत्त्व केवल प्रारंभ में अर्थात् उपसर्ग रूप में लगता है। जैसे – उमु (एकवचन का चिह्न), अब (बहुवचन का चिह्न), न्तु (आदमी) शब्दों से उमुन्तु (एक आदमी) या अबन्तु (कई आदमी) आदि बनते हैं।

(ख) मध्य योगात्मक या अंतः प्रत्यय – संथाली आदि भाषाएँ इस वर्ग की हैं जहाँ शब्द के बीच में संबंध तत्त्व जुड़ते हैं। जैसे – मंझि (मुखिया) और प (बहुवचन का चिह्न) का योग 'मपंझि' (मुखिया लोग) के रूप में होता है।

(ग) पूर्वान्त योगात्मक या पुरः परः प्रत्यय – इस वर्ग की भाषाओं में संबंध तत्त्व पहले और बाद में दोनों लगाया जाता है। जैसे न्यूगिनी की मकोर भाषा में 'ज-म्नफ-उ' वाक्य में 'ज' (मैं) पुरः प्रत्यय और 'उ' परप्रत्यय है। अतः इस वाक्य का अनुवाद है – मैं तेरी बात सुनता हूँ।

(घ) अन्त योगात्मक या पर-प्रत्यय — तुर्की एवं द्रविड़ परिवार की भाषाएँ इसी वर्ग की हैं, जहाँ संबंध तत्व केवल अन्त में जुड़ते हैं। जैसे — तुर्की भाषा में एव = घर, एवलेर = कई घर, एवलेरइम = मेरे घर।

(ङ) आंशिक योगात्मक या ईषत् प्रत्यय — इस वर्ग की भाषाओं में योगात्मकता और अयोगात्मकता दोनों के चिह्न मिलते हैं। जापानी, न्यूजीलैन्ड की भाषाएँ इसी तरह की हैं।

(स) श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ — इस वर्ग की भाषाओं में संबंध तत्व जुड़ने से अर्थतत्व में कुछ विकार उत्पन्न होता है। यहाँ विकार होने के बावजूद संबंध तत्व की पहचान बनी रहती है। इस प्रकार की भाषाओं के दो प्रकार हैं —

(क) अन्तर्मुखी श्लिष्ट — इस वर्ग की भाषाओं के मूल शब्द में संबंधतत्व बिल्कुल घुल-मिल जाते हैं। जैसे अरबी भाषा में क्-त्-ब् धातु से कातिब (लिखनेवाला), किताब (लिखा गया), कुतुब (बहुत किताबें) शब्द बनते हैं। सेमेटिक-हेमेटिक परिवार इसी वर्ग की भाषाएँ हैं। इस वर्ग में संयोगात्मक-वियोगात्मक दोनों प्रकार की भाषाएँ हैं।

(ख) बहिर्मुखी श्लिष्ट — इस वर्ग की भाषाओं में संबंधतत्व मूल शब्द के बाद आते हैं। भारोपीय परिवार की भाषाएँ इसी वर्ग की हैं, जो प्राचीन काल में संयोगात्मक थीं और बाद में वियोगात्मक बन गईं। जैसे संस्कृत में 'गम्' धातु से गच्छति, गच्छन्ति जैसे शब्द या हिन्दी में 'जाना' धातु से जाता है, जाते हैं आदि बन जाते हैं।

इस प्रकार शब्दों और वाक्यों के मूल अर्थतत्व में संबंध तत्व (उपसर्ग-प्रत्यय) के जुड़ने की प्रकृति के आधार पर विश्व की भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण किया गया है।